SNEH TEACHERS TRAINING COLLEGE, JAIPUR
"Foster Emotional Intelligence in Youth Through Education" (ICFEIYE-2024)
DATE: 15 April 2024
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 7.938

संवेगात्मक बुद्धि तथा पारिवारिक वातावरण के बीच अंतर संबंध

श्रीमती मधु धाकड़, शोधार्थी (शिक्षाशास्त्र), आई.आई.एस. (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी), जयपुर

प्रस्तावना

शिक्षा आदिकाल से चली आ रही मानव व्यवहार को परिमार्जित करने वाली प्रक्रिया है । शिक्षा मानव जीवन के विकास की वह प्रक्रिया है जो शैशवावस्था से प्रारंभ होकर पड़ा अवस्था तक चलती रहती है। शिक्षा का अर्थ बालकों की आंतरिक अथवा अन्तःनिहित क्षमताओं का विकास करना है। प्लेटो ने शारीरिक, मानसिक तथा बौद्धिक विकास की प्रक्रिया को ही शिक्षा के रूप में परिभाषित किया है । शिक्षा किसी समाज में सदैव चलने वाली सोउद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य के ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है

पेस्टालॉजी ने शिक्षा के बारे में कहा है– "शिक्षा मनुष्य की संपूर्ण शक्तियों का प्राकृतिक प्रगतिशील और समग्र विकास करती है।"

संवेगात्मक बुद्धि –

वर्तमान युग प्रतियोगिता का युग है ।उपलब्धि प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि अच्छी हो। बुद्धि व्यक्तियों को समस्या समाधान करने, वस्तुओं के सृजन में, सांस्कृतिक मूल्य युक्त विभिन्न क्षेत्रों में नए ज्ञान की खोज में सहायता करती है गार्डन में बुद्धि के अंत व्यैक्तिक रूप में भावनात्मक बुद्धि या संवेगात्मक बुद्धि का प्रतिपादन किया ।

संवेगात्मक बुद्धि शब्द दो शब्दों के योग से बना है– संवेग (भावनाएँ) तथा बुद्धि संवेग हमारे संसार के प्रति प्रतिक्रियाओं का ही योग है जो हमारे विचारों, भावनाओं तथा क्रियाओ से बने हैं।

बुद्धिअपेक्षाकृत नवीन परिस्थितियों में अभियोजित करने की क्षमता है विभिन्न समस्याओं के समाधान में शाब्दिक व संख्यात्मक प्रति का प्रयोग ही बुद्धि है। संवेगात्मक बुद्धि सभी में काम या अधिक होती है । अपनी व दूसरों की भावनाओं को समझ कर, उनके बीच उचित तालमेल बनाकर, भावनाओं पर नियंत्रण रखकर समय व परिस्थिति के अनुरूप भावनाओं का प्रदर्शन करना ही भावनात्मक बुद्धि कहलाता है।

1993 मे सर्वप्रथम मेयर और सलोवे ने संवेगात्मक बुद्धि का विचार रखा जिसके अनुसार भावनात्मक बुद्धि सामाजिक बुद्धि का ही एक प्रकार है क्योंकि भावनात्मक बुद्धि व्यक्ति की सामाजिकता या सामाजिक उपलब्धि को निर्धारित करती है।

मेयर व सलोवे (1997) के अनुसार –" भावनात्मक बुद्धि भावनाओं को ग्रहण करने की, मापन करने की तथा भावनाओं को उत्पन्न करने की योग्यता है जो कि विचारों को, भावनाओं को समझने व भावनात्मक ज्ञान में तथा विचारों में भावनाओं को व्यवस्थित करने में सहायक है।"

डैनियल गोलमैन(1997) के अनुसार –" संवेगात्मक बुद्धि अपने संवेगों को जानने एवं देखभाल करने तथा दूसरों में इनकी पहचान करने और अपने संबंधों को कायम रखने में है।"

पारिवारिक वातावरण

किसी भी बालक के संवेगात्मक (भावनात्मक) विकास में उसके परिवार का महत्वपूर्ण योगदान होता है। परिवार समाजीकरण की मुख्य संस्था के रूप में है । जीवन की मूल प्रवृत्तियो की संतुष्टि और विकास पारिवारिक वातावरण में ही संभव है। बालकों के व्यक्तित्व का विकास, मानव विकास व भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति पारिवारिक परिवार के माध्यम से ही होती है जो आपकी समन्वय और सहयोग से कार्यान्वित होती है। एक सभ्य तथा सुसंस्कृत परिवार बच्चे के चरित्र निर्माण से लेकर व्यक्ति की सफलता तथा उन्नति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। परिवार अंतः क्रियाशील व्यक्तियों का समूह है। पारिवारिक वातावरण से तात्पर्य परिवार के लोगों के रहन–सहन, बोलचाल ,उनका आपसी सामंजस्य, बनाए गए नियम, अनुशासन तथा उनमें निहित मूल्य से है जिसके द्वारा परिवार में रहने वाले लोग एक दूसरे के साथ व्यवहार स्थापित करते हैं। पारिवारिक वातावरण परिवारके सदस्यों का खान–पान ,रहन–सहन ,रीति रिवाज, मूल्य, आदर्श ,एक दूसरे के प्रति व्यवहार तथा उनके मध्य पारस्परिक अंतः क्रिया आदि का संगठित रूप होता है। पारिवारिक वातावरण के अनुकूल ही बालक सामाजिक सांस्कृतिक मूल्यों को तथा सदाचार को अपने कार्य तथा व्यवहार में डालता है पारिवारिक वातावरण जितना उत्तम होगा बालक का सामाजिक, बौद्धिक ,शारीरिक तथा भावनात्मक विकास उतना ही बेहतर होता है

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 7.938

संवेगात्मक बुद्धि के विकास में पारिवारिक वातावरण की भूमिका –

बालक अपने संवेगों का उपयोग करना और भौतिक जगत को समझना और उनका सामना करना परिवार में ही सीखता है । परिवार से बच्चे अपने रिश्तों को जानते हैं तथा यहीं से वे अपने रिश्तों तथा परिवार के सदस्यों से सामंजस्य बनाना सीखते है । परिवार में वह बड़ों का सम्मान करना व छोटों का स्नेह करना सीखता है । एकांकी परिवार की अपेक्षा संयुक्त परिवार के बच्चे सहयोग एवं समायोजन सीखते है । परिवार में धन खुशी नही ला सकता । इसीलिए स्वस्थ्य व खुशहाल परिवार के लिए रिश्तों को समझना अति आवश्यक है।

बच्चों के जीवन व उनके व्यवहार पर पारिवारिक वातावरण का बहुत प्रभाव पड़ता है । पारिवारिक वातावरण का प्रभाव बालक के संवेगों पर पड़ता है जिससे उसकी संवेगात्मक बुद्धि प्रभावित होती है । पारिवारिक वातावरण के अनुकूल ही बालक भिन्न–भिन्न प्रकार की अभिवृत्तियों जैसे प्रेम, स्नेह, घृणा आदि को सकारात्मक तथा नकारात्मक रूप में प्रदर्शित करते हैं । बालकों की संवेगात्मक अभिव्यक्ति उसकी शारीरिक वृद्धि, ज्ञान, अनुभव व रुचियों के आधार पर ही होती है । अतः हर माता–पिता का कर्तव्य यह है कि वह घर एवं परिवार का वातावरण स्वस्थ तथा परिष्कृत बनाएँ । क्योंकि जब बालक अपने संवेगों पर नियंत्रित रखने में सक्षम हो जाता है तब उसकी संवेगात्मक बुद्धि संतुलित मानी जाती है

अतः निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि स्वस्थ पारिवारिक वातावरण भावनात्मक बुद्धिमत्ता को भी बढ़ावा देता है । जो बच्चे ऐसे परिवारों में बड़े होते हैं जहां भावनाओं को स्वीकार किया जाता है और व्यक्त किया जाता है, उनमें भावनात्मक बुद्धि विकसित होने की अधिक संभावना होती है । वे अपनी भावनाओं को पहचानने तथा प्रबंधित करना सीखते हैं तथा दूसरों के लिए सहानुभूति भी विकसित करते हैं ।

IAJESM
Quality Of Work... Never Ended...